RAS MAINS TEST SERIES 2018

PAPER –II GENERAL KNOWLEDGE AND GENERAL STUDIES

Unit-II - **SOCIOLOGY**

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 15-15 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक निर्धारित है।

1. वर्ग (Class) को परिभाषित कीजिए ?

उत्तरः—व्यक्तियों का वह समूह जिनका उत्पादन के साधनों के साथ समान या नियत संबंध हो तथा उनमें अपने हितों के प्रति चेतना पाई जाती है, वर्ग कहलाता है। यह एक आर्थिक अवधारणा है।

2. धर्मनिरपेक्षता का भारत के सन्दर्भ में क्या आशय है ?

उत्तरः—भारतीय समाज का वह सामाजिक, सांस्कृतिक व संवैधानिक मूल्य, जो विज्ञान, तर्क व तटस्थता को सर्वोपरि मानते हुए राज्य, कानून, प्रशासन व शिक्षा प्रणाली को धर्म से पृथक करता है, 'धर्म निरपेक्षता' कहलाता है।

3. सामाजिक मूल्यों (Social values) के कोई दो सकारात्मक प्रभाव बताओ ?

उत्तरः- 1) सामाजिक मापदण्ड का आधार है, जो विषमगामी व्यवहार को नियंत्रित करते है।

2) समाज के नैतिक उत्थान के लिए सामाजिक मूल्यों का होना आवश्यक है।

4. सामाजिक मूल्यों के आयाम (Dimensions) बताईये ?

उत्तरः-1) जैविक आयाम- जीवन निर्वाह से संबंधित।

2) सामाजिक आयाम-समाज में व्यवस्था व संगठन बनाए रखने हेतु।

3) आध्यात्मिक मूल्य- लोकातीत महत्व वाले मूल्य।

5. मीणा जनजाति की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित मान्यता क्या है ?

उत्तरः- मत्स्य पुराण के अनुसार मीणा जनजाति की उत्पत्ति मत्स्य अवतार से मानी जाती है। मीणा शब्द मीन अर्थात् मछली शब्द से व्युत्पित है।

6. सामाजिक मूल्यों के कितने प्रकार है ? वर्णन कीजिए।

उत्तरः-राधाकमल मुखर्जी ने मूल्यों को दो प्रकार में वर्गीकृत किया है-

साध्य मूल्य	साधन मूल्य
▪ अर्मूत या लोकातीत मूल्यों का समूह है जो समाज एवं व्यक्ति के उच्चतम आदर्श व लक्ष्य होते है।	▪ विशिष्ट या अस्तित्व मूलक मूल्य जो लौकिक लक्ष्यों की पूर्ति के उपकरण के रूप में प्रयोग किए जाते है।
▪ व्यक्ति के आचरण से अभिव्यक्त होते है, इन मूल्यों के आन्तरीकरण से व्यक्तित्व का निर्माण होता है।	▪ सम्पत्ति, सत्ता, व्यवसाय इत्यादि से संबंधित मूल्य है।
▪ जीवन के आधारभूत तत्व	▪ लक्ष्य प्राप्ति हेतु आवश्यक
▪ सार्वभौमिक मूल्य	▪ विशिष्ट मूल्य

7. जाति व वर्ग में विभेद कीजिए । (Differentiale caste and class)

उत्तरः-

जाति	वर्ग
1. धार्मिक व सामाजिक अवधारणा	1. आर्थिक अवधारणा
2. जन्म आधारित सदस्यता	2. अर्जित/योग्यता आधारित सदस्यता
3. बंद व्यवस्था अन्तः विवाह भोजन संबंधी प्रतिबन्ध	3. खुला/गतिशीलता व अन्तः विवाह आवश्यक नहीं, भोजन प्रतिबंध नहीं
5. समान जीवन शैली	4. समान जीवन अवसर
6. संस्तरण अधिक स्पष्ट	5. संस्तरण कम स्पष्ट
7. निश्चित व्यवसाय	6. निश्चित व्यवसाय की बाध्यता नहीं
8. जजमानी व जाति पंचायत	7. जजमानी व जाति पंचायत की व्यवस्था नहीं

सारथि एकेडमी

8. भारतीय समाज में संस्कार व्यवस्था की उपयोगिता पर टिप्पणी कीजिए ?

उत्तरः- संस्कार व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है। उपयुक्त समय /आयु में नियत कार्य करने की प्रवृति को समाज में विकसित करने में संस्कार व्यवस्था महत्वपूर्ण है। संस्कार व्यवस्था भावी पीढी को संस्कृति से जोड़ने के लिए सेतू है अर्थात् सांस्कृतिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

संस्कार व्यवस्था का उत्सव के रूप में लौकिक महत्व भी है। यह व्यक्ति की विभिन्न संक्रमण-कालीन अवस्थाओं में तनाव कम कर आत्मविश्वास में वृद्वि करती है अर्थात् परिवर्तन की अवधि में संस्कार मनोवैज्ञानिक सुदृढीकरण करते है। साथ ही संस्कारों का एक वैज्ञानिक पक्ष भी प्रमाणित किया गया है, यथा- कर्णभेदन, निष्क्रमण(पराबैंगनी किरणों से बचाव), अन्न प्राषण (माता के दुग्ध की महत्ता) इत्यादि संस्कार व्यवस्था का तार्किक पक्ष प्रस्तुत करते है।

संस्कार व्यवस्था आंतरिक शुद्विकरण द्वारा समाज के नैतिक पक्ष को मजबूत करती है, साथ ही समाज की मान्यता के अनुसार अदृश्य, अलौकिक शक्ति को प्रसन्न करने व आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु किये गये अनुष्ठानों का आध्यात्मिक महत्व भी है। इस प्रकार संस्कार व्यवस्था का भारतीय समाज में बहुआयामी महत्व रहा है।

सारथि एकेडमी